२ गोल

कहानी का सारांश

यह कहानी एक प्रसिद्ध हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद कि है। वे तीन बार ओलम्पिक के स्वर्ण पदक जीतने वाली भारतीय हॉकी टीम के सदस्य थे। उन्होंने बताया है कि कैसे उन्होंने खेल भावना और लगन से हॉकी में महारत हासिल की।

उन्होंने एक घटना का जिक्र किया है जिसमें एक प्रतिद्वंद्वी ने उन्हें चोट पहुंचाई थी, लेकिन उन्होंने शांति से बदला लिया और प्रतिद्वंद्वी को खेल भावना का महत्व समझाया। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे उन्होंने ओलंपिक में भारत के लिए स्वर्ण पदक जीता और उन्हें "हॉकी का जादूगर" कहा जाने लगा।

शिक्षा:-

- सफल होने के लिए हमें कड़ी मेहनत करनी चाहिए।
- खेल भावना से हम जीवन में कई मुश्किलों को पार कर सकते हैं।
- दूसरों को प्रेरित करना और उनके साथ काम करना महत्वपूर्ण है।
- अपने देश के लिए कुछ करना हमारे लिए गर्व की बात है।

शब्दार्थ

धक्का-मुक्की	: धक्का, मारपीट, हाथापाई	**गुरु मंत्र**	: उपदेश, सीख
नोंक-झोंक	: विवाद, झगड़ा, तकरार	**साधारण**	: सामान्य, सरल
मुकाबला	: मैच, प्रतिस्पर्धा, प्रतियोगिता	**दिलचस्पी**	: रूचि
कोशिश	: प्रयास	**भर्ती**	: नियुक्त
बेकार	: व्यर्थ, निरर्थक, बेफायदा	**नौसिखिया**	: अनुभवहीन
गुस्सा	: क्रोध, आक्रोशत	**निखार**	: विकास, सुधार
झटपट	: जल्दी, तुरंत, शीघ्र	**तरक्की**	: प्रगति, उन्नति, विकास
शर्मिंदा	: लज्जित, अशांत	**कप्तान**	: नेता, सेनापति
लगन	: मेहनत, प्रयास, परिश्रम	**प्रभावित**	: मोहित, आकर्षित
साधना	: अभ्यास, तपस्या	**श्रेय**	: यश, कीर्ति
खेल भावना	: खेल का भाव	**स्वर्ण पदक**	: सोने का सिक्का
सफलता	: कामयाबी, उपलब्धि	**छावनी**	: सैनिकों के रहने का क्षेत्र।

धक्का-मुक्की: झगड़ा करना

नोंक-झोंक: हल्की-फुल्की बहस

साधारण: सामान्य

मुकाबला: प्रतियोगिता।

गुस्सा: क्रोध
पट्टी: बैंडेज
गद: गेंद
झटपट: तुरंत
दोसत: मित्र
गुरु-मंत्र: महत्वपूर्ण सलाह
हॉककी: हॉकी
अभयास: अभ्यास
जदलचसपी: रुचि
नौजसजखया: नया व्यक्ति
प्रभाजवत: प्रभावित
प्रेरणा: प्रेरणादायक
सववोचच: सर्वोच्च

लेखक परिचय

मेजर ध्यानचंद का जन्म 1905 में उत्तर प्रदेश में हुआ था। उन्हें हॉकी का जादूगर कहा जाता है और वे भारतीय हॉकी टीम के सबसे महान खिलाड़ियों में से एक थे। उनके नेतृत्व में भारत ने ओलंपिक खेलों में कई स्वर्ण पदक जीते। ध्यानचंद की खेल भावना, टीम के प्रति समर्पण और अद्वितीय खेल कौशल ने उन्हें विश्व स्तर पर सम्मान दिलाया। उन्हें उनके खेल जीवन में कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए।

सोच-विचार के लिए

स्मरण को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित के बारे में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए-

(क) ध्यानचंद की सफलता का क्या रहस्य था?

उत्तर: ध्यानचंद की सफलता का रहस्य उनकी लगन, साधना, और खेल भावना थी। उन्होंने खेल को सही भावना से खेला और हमेशा अपनी टीम को महत्व दिया।

(ख) किन बातों से ऐसा लगता है कि ध्यानचंद स्वयं से पहले दूसरों को रखते थे?

उत्तर: ध्यानचंद हमेशा यह कोशिश करते थे कि वे गेंद को गोल के पास ले जाकर अपने किसी साथी खिलाड़ी को दें ताकि उसे गोल करने का श्रेय मिल जाए। उन्होंने हमेशा टीम को प्राथमिकता दी और अपने व्यक्तिगत लाभ से पहले टीम की जीत को महत्व दिया।

संस्मरण की रचना

"उन दिनों में मैं, पंजाब रेजिमेंट की ओर से खेला करता था।"

इस वाक्य को पढ़कर ऐसा लगता है मानो लेखक आपसे यानी पाठक से अपनी यादों को साझा कर रहा है। इस पाठ में ऐसी और भी अनेक विशेष बातें दिखाई देती हैं।

(क) अपने-अपने समूह में मिलकर इस संस्मरण की विशेषताओं की सूची बनाइए।

उत्तर:

- यह संस्मरण व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित है।
- इसमें खेल भावना और अनुशासन का महत्व बताया गया है।
- लेखक की सरलता और टीम भावना को दर्शाता है।
- प्रेरणादायक और शिक्षाप्रद है।

(ख) अपने समूह की सूची को कक्षा में सबके साथ साझाककीजिए।

उत्तर: यह संस्मरण व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित है। इसमें खेल भावना और अनुशासन का महत्व बताया गया है। लेखक की सरलता और टीम भावना को दर्शाता है। प्रेरणादायक और शिक्षाप्रद है।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Short Answer Type Questions)

1. **ध्यानचंद की सफलता का राज क्या था?**

   उत्तर: ध्यानचंद की सफलता का राज उनकी **कड़ी मेहनत, अनुशासन और खेल** के प्रति समर्पण था। उन्होंने लगन और अभ्यास से अपने खेल को निखारा। टीम भावना और ईमानदारी भी उनकी सफलता के महत्वपूर्ण कारण थे।

2. **ध्यानचंद ने कब और कैसे 'हॉकी' खेलना शुरू किया?**

   उत्तर: मेजर ध्यानचंद ने 16 वर्ष की आयु में '**फर्स्ट ब्राह्मण रेजिमेंट**' में एक साधारण सिपाही के रूप में भर्ती होकर हॉकी खेलना शुरू किया। रेजिमेंट के सूबेदार मेजर तिवारी ने उन्हें हॉकी खेलने के लिए प्रेरित किया। शुरुआत में वे नौसिखिए की तरह खेलते थे, लेकिन धीरे-धीरे उनके खेल में निखार आता गया और वे एक उत्कृष्ट खिलाड़ी बन गए।

3. **ध्यानचंद में अच्छे खिलाड़ी होने के कौन-से विशेष गुण थे?**

   उत्तर: ध्यानचंद में अच्छे खिलाड़ी होने के निम्नलिखित गुण थे:

   - वे लगन, साधना और पूर्ण खेल भावना से खेलते थे।
   - वे जीतने का श्रेय स्वयं न लेकर पूरी टीम को देते थे।
   - वे अपना नहीं बल्कि अपने देश का नाम करना चाहते थे।

4. **ध्यानचंद ने हॉकी खेलने की प्रेरणा कहाँ से प्राप्त किया?**

   उत्तर: ध्यानचंद ने हॉकी खेलने की प्रेरणा अपनी रेजिमेंट **'ब्राह्मण रेजिमेंट'** के सूबेदार मेजर तिवारी से प्राप्त की, जिन्होंने उन्हें हॉकी खेलने के लिए प्रेरित किया और उन्हें अपने खेल को सुधारने में मदद किया।

5. **ध्यानचंद को 'हॉकी के जादूगर' की उपाधि क्यों मिली?**

   उत्तर: सन् 1936 में बर्लिन ओलंपिक में जब उन्हें कप्तान बनाया गया तो वे सेना में 'लांस नायक' के पद पर थे। लोग उनके खेलने के ढंग से इतने प्रभावित हुए कि उन्हें 'हॉकी का जादूगर' कहने लगे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नोत्तर (Long Answer Type Questions)

1. **बर्लिन ओलंपिक 1936 में भारतीय टीम की जीत में ध्यानचंद की भूमिका का वर्णन करें।**

   उत्तर: 1936 के **बर्लिन ओलंपिक में भारतीय टीम** का नेतृत्व ध्यानचंद ने किया। फाइनल मैच में भारतीय टीम ने जर्मनी के खिलाफ खेला और 8-1 से जीत हासिल की। इस मैच में ध्यानचंद ने न केवल अपने कौशल का प्रदर्शन किया, बल्कि पूरी टीम को भी जीत की ओर प्रेरित किया। इस जीत ने ध्यानचंद को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई और भारतीय हॉकी की धाक जमाई।

2. **ध्यानचंद के जीवन से हम व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में क्या सीख सकते हैं?**

   उत्तर: ध्यानचंद के जीवन से हम यह सीख सकते हैं कि **समर्पण, अनुशासन, और टीम भावना** किसी भी क्षेत्र में सफलता के लिए महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने हमेशा टीम की सफलता को प्राथमिकता दी और अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों को पीछे रखा। उनकी जीवनशैली और खेल के प्रति समर्पण हमें सिखाता है कि कड़ी मेहनत और अनुशासन से किसी भी लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

3. **ध्यानचंद का बदला लेने का ढंग क्या था?**

   उत्तर: ध्यानचंद ने अपने खेल कौशल से बदला लिया। सिर पर चोट लगने के बावजूद उन्होंने खेल जारी रखा। पट्टी बंधवाने के बाद मैदान में लौटकर उन्होंने उस खिलाड़ी से कहा कि वे अपनी चोट का बदला जरूर लेंगे। इसके बाद, ध्यानचंद ने **जोश और उत्साह** के साथ लगातार छह गोल कर 'सैंपर्स एंड माइनर्स' टीम को हरा दिया। उनका बदला लेने का तरीका आक्रामक नहीं बल्कि खेल भावना से भरा हुआ था, जिसमें उन्होंने अपनी प्रतिभा और कौशल से जवाब दिया।

पाठ से आगे

I. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs)

1. **ध्यानचंद का जन्म किस वर्ष हुआ था?**

   (a) 1904 (b) 1905 (c) 1906 (d) 1907

   उत्तर: (b) 1905

2. **'माइनस टीम' के खिलाड़ी ने ध्यानचंद के सिर पर क्या मारा था?**

(a) फुटबॉल (b) क्रिकेट बैट (c) हॉकी स्टिक (d) बास्केटबॉल

उत्तर: (c) हॉकी स्टिक

3. **ध्यानचंद को किस उपाधि से नवाज़ा गया था?**

(a) खेल रत्न (b) हॉकी का जादूगर (c) ओलंपिक विजेता (d) राष्ट्रीय खिलाड़ी

उत्तर: (b) हॉकी का जादूगर

4. **ध्यानचंद की आत्मकथा का नाम क्या है?**

(a) खेल (b) गोल (c) हॉकी (d) खिलाड़ी।

उत्तर: (b) गोल

5. **ध्यानचंद ने 1936 के ओलंपिक में कितने गोल किए थे?**

(a) चार (b) पांच (c) छह (d) उल्लेख नहीं है

उत्तर: (d) उल्लेख नहीं है

II. सही या गलत (True/False)

1. **ध्यानचंद ने अपना बदला गुस्से से लिया।** **उत्तर**: गलत
2. **ध्यानचंद ने 1936 के बर्लिन ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीता।** **उत्तर:** सही
3. **ध्यानचंद को 'हॉकी का जादूगर' कहा जाता था।** **उत्तर**: सही

III. रिक्त स्थान भरें (Fill in the blanks)

1. **ध्यानचंद का जन्म _____ में हुआ था।** **उत्तर**: 1905
2. **'माइनस टीम' के खिलाड़ी ने ध्यानचंद के _____ पर हॉकी स्टिक मारी।** **उत्तर**: सिर
3. **1936 बर्लिन ओलंपिक में ध्यानचंद को '_____' के रूप में पहचाना गया था।**

   उत्तर: हॉकी का जादूगर
4. **ध्यानचंद ने अपनी आत्मकथा का नाम _____ रखा।** **उत्तर**: गोल
5. **भारत ध्यानचंद के जन्मदिन को _____ के रूप में मनाता है।** **उत्तर**: राष्ट्रीय खेल दिवस

IV. रचनात्मक प्रश्न (Creative questions)

1. **ध्यानचंद ने अपने जीवन में खेल भावना को किस प्रकार बनाए रखा? (छोटे अनुच्छेद में उत्तर दें)**

   ध्यानचंद ने हमेशा खेल भावना को सर्वोपरि रखा। उन्होंने कभी भी विपक्षी खिलाड़ी को चोट पहुंचाने या अनुचित लाभ उठाने का प्रयास नहीं किया। उन्होंने हमेशा खेल को एक सकारात्मक दृष्टिकोण से देखा, और अपनी जीत को व्यक्तिगत न मानकर, उसे अपने देश की जीत समझा। उनका मानना था कि खेल एक उत्सव है, और इसे सम्मान और निष्ठा के साथ खेलना चाहिए।

2. **ध्यानचंद की आत्मकथा 'गोल' का नाम क्यों रखा गया? (संक्षेप में उत्तर दें)**

   ध्यानचंद की आत्मकथा का नाम 'गोल' इसलिए रखा गया क्योंकि गोल करना उनके खेल का एक अभिन्न अंग था। वह एक महान हॉकी खिलाड़ी थे और गोल करने में माहिर थे। 'गोल' नाम उनकी खेल के प्रति समर्पण और सफलता का प्रतीक है, जो उनके पूरे जीवन का सार दर्शाता है।